पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
e-mail-pawanprawah@gmail.com
वर्ष 08 अंक 09 लखनऊ। सोमवार 21 से 27 नवम्बर-2016

वैदिक विज्ञान केंद्र की तकनीकी शिक्षा में एक अनोखी पहल

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी हैं

भारत के ग्रन्थों में छिपे अद्भुत रहस्यो को जानने व तत्समय उपलब्ध तकनीकी ज्ञान को वर्तमान में प्रयोग में लाये जाने हेतु, स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्सेज ने विगत वर्ष अप्रैल 2015 को 'वैदिक विज्ञान केन्द्र' की स्थापना की। इस केन्द्र का उद्देश्य वेद, पुराण, महाभारत व रामायण आदि जैसे ग्रन्थों में उपलब्ध ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रदेश, देश व विदेश के प्रबुद्ध वर्ग द्वारा आंकलित कर उनमें उद्धरित तथ्यों को जन-समूह के सम्मुख प्रस्तुत करना है और अपने शोध को गति देना है। प्रो. सिंह कहते हैं कि वैदिक विज्ञान के बहुमूल्य शोध को विद्यार्थियों व अध्यापकगणों में प्रसारित कर उन्हें आत्मसात कराया जा रहा है जो कि निम्नवत् है-

1.मनुष्य के शरीर की संरचना में उसके जीवन को आगे बढ़ाने के लिए हृदय की धड़कन से रक्त का संचार कोशिकाओं द्वारा शरीर के हर अंगों में पहुचता है। लखनऊ व आस-पास के प्रबुद्ध वर्ग के साथ सामयिक बैठक करते हुए यह निष्कर्ष निकला कि रक्त में लौह की मात्रा है तथा धमनियों के द्वारा लौह युक्त रक्त का संचार निरंतर हो रहा है। यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई मैगनेटिक शक्ति को ऊपर नीचे किया जाय तो धमनियों में दौड़ते हुए लौहयुक्त रक्त में विद्युतीय शक्ति का प्रवाह होने लगेगा। और शरीर में एक ऊर्जा का अनुभव होगा जिससे वाह्य पदार्थ (भोजन) के सेवन से जिस शक्ति का संचार होता है वह बिना किसी भोजन पदार्थ अथवा कम भोजन के सेवन से पैदा हो सकती है। इस तथ्य का अनुभव वेद-मंत्रों आदि के उच्चारण से भी महसूस किया जाता रहा है। इसी क्रम में छात्र-छात्राओं व अध्यापकगणों द्वारा प्रतिदिन प्रार्थना शुरू की गयी है और सभी लोगों में एक अलग ऊर्जा का संचार हो रहा है तथा उनके पठन-पाठन में भी एकाग्रता बढ़ी है।

2.वैदिक विज्ञान केन्द्र में समृद्धि प्रबुद्ध वर्ग के अनुभवों का आपस में आदान-प्रदान करते हुए, एक सप्ताह में एक घंटे का योग कार्यक्रम भी चलाया रहा है, जिससे छात्र छात्राओं व अध्यापकगणों में मानसिक व शारीरिक विकास को गति दी जा सके। यह कार्यक्रम पिछले 'विश्व-योग दिवस' (21 जून 2015) से कुछ अध्यापकगणों द्वारा प्रारम्भ किया गया है। उनके अनुभव के अनुसार यह निष्कर्ष निकला है कि श्वासों के स्पन्दन से, जो भ्रस्तिका, कपालभाती और अनुलोम-विलोम से पैदा होती है, धमनियों की शक्ति में वृद्धि होती है, और धमनियों में अवरूद्ध-रक्त के थक्के भी दूर हो जाते है।

3.पुराने ग्रन्थों (वेद-पुराण महाभारत एवं रामायण आदि) में विमान अथवा उड़नखटोले का भी जिक्र आता है। इसके लिए भी यह केन्द्र भारत के ग्रन्थों की खोज में लगा हुआ है तथा महर्षि भरद्वाज द्वारा वैमानिक शास्त्र की पाण्डुलिप के, जो अवशेष अंश भारतवर्ष में प्राप्त हुए थे, उसका हस्तलिपि पंडित सुबराय शास्त्री द्वारा 1916 में तैयार किया गया था। जिसमें मात्र छः भाग ही प्राप्त हुए थे। वर्ष 1973 में इसका अंग्रेजी में अनुवाद, जियाद जोशेयर ने किया था। इस केन्द्र द्वारा इसका भी समय-समय पर गहन अध्ययन किया जा रहा है और बच्चों में भी पौराणिक-विज्ञान के क्षेत्र में हुए विकास की जानकारी दी जा रहा है।

4.वैदिक विज्ञान केन्द्र द्वारा वर्ष 2015 के जून माह में यह भी संकलित किया गया था कि पाँच हजार वर्ष पूर्व महाभारत में उपयोग किया गया विमान अफगानिस्तान के पहाड़ियों की एक गुफा में मिला है जिसे आठ (8) अमेरिकी सैनिक कमांडो द्वारा उक्त विमान को निकालने की कोशिश की गयी तथा उसमें असीमित ऊर्जा होने के कारण आठों कमांडो अदृश्य हो गये और आज तक उनका पता नही चल सका।

यही नही उक्त विमान का स्थल निरीक्षण अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपनी अफगानिस्तान की गुप्त यात्रा द्वारा किया तथा उन्होंने तीन महाराष्ट्राध्यक्षों को भी जनवरी 2013 में देखने हेतु आमंत्रित किया था, जिसमें फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन के राष्ट्राध्यक्ष गये थे। पता चला है कि यह विमान बाद में अमेरिका के नासा द्वारा डगलास केन्द्र पर शोध हेतु उठा ले जाया गया है। यह सूचना अमेरिकी सैनिकों के रहस्योंद्घाटन से अमेरिकी वेबसाइट Ancient Aliens disclose.tv पर डाली गयी थी, जिसका विडियो बाद में हटा दिया गया है, परन्तु उनके सैनिकों के बात-चीत का आडियो अभी भी मौजूद है।

उक्त विविरण का विस्तृत विडियों इसी फरवरी माह में आइ.बी.एन.7 द्वारा प्रसारित किया गया है, जिसका सारांश यह है कि -

भारत में पांच हजार साल पहले विमान उड़ रहे थे, क्या महाभारत का युद्ध उन विमानों पर लड़ा गया था क्या प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों में कैद वो विमान वाकई में दुनिया के किसी कोने से खोज निकाला गया है। इसे सदी का सबसे बड़ा रहस्य कहा जा रहा है इस रहस्य को सुलझाने का दावा अफगानिस्तान में किया गया है, कहा जा रहा है कि अफगानिस्तान में एक पहाड़ी की एक गुफा में 5000 साल पुराना एक भारतीय विमान मिला है और ये विमान एक अजीब से ऊर्जा के कवच के घेरे में था।

कहा ये भी जा रहा है कि 8- अमेरिकी फौजी उस विमान को बाहर निकालने के दौरान अचानक ही गायब हो गए और उसके बाद अमेरिकी राष्ट्रपति ने कई देशों के प्रमुखों को अफगानिस्तान बुलाया और एक हफ्ते के भीतर तीन और देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने अफगानिस्तान का सीक्रेट दौरा किया। और इसकी खबर रूस के राष्ट्रपति ब्लादीमीर पुतिन को भी लगी, इन्होंने भी अपनी सिक्रेट एजेंसी से इसकी पुष्टि की।

प्रो. सिंह ने यह भी बताया कि 5000 वर्ष पूर्व जिस विमान का उल्लेख 'महाभारत के ग्रन्थ में शकुनि मामा के द्वारा उपयोग में लाया गया था, वह आज भी उपलब्ध है। इस बात की पुष्टि होने पर सभी भारतीयों का सीना गर्व से ओत-प्रोत हो जायेगा और हमारे ग्रन्थों की सत्यता प्रमाणित हो जायेगी।

वैदिक विज्ञान केन्द्र के निदेशक प्रो. (डॉ.) भरत राज सिंह जो एस.एम.एस. के तकनीकी निदेशक भी है द्वारा प्रदेश व भारत के सभी प्रबुद्ध-वर्ग व वैज्ञानिकों से अनुरोध किया गया है कि वह इस केन्द्र से जुड़े और भारतवर्ष के पौराणिक ग्रन्थों में छिपे वैज्ञानिक तथ्यों को दुनिया के सामने लाने व भारतवर्ष के असीमित ज्ञान की धरोहर को पुनर्जीवित कर विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में नये-नये शोध कर देश को अग्रणी बनाने में सहयोग दें।